Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11568346

Roll No. 24029000612
Total Mark 57/75.00

Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A010902T - Kathetar Gadya Sahitya

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	3/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	5/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	11/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	10/15						
9	0/15						

PART-I

Date of Exam : 2-11-25 Shift : .... Room No. 05

Paper Code A010902T Subject: Hindi Year/Sem. 3rd

Name of Candidate SAHASTRANSHU MISHRA

Roll No. | 2 | 4 | 0 | 2 | 9 | 0 | 0 | 0 | 6 | 1 | 2 |

Signature of Candidate: सहस्त्रांशु मिश्रा

Signature of Invigilator

COE Facsimile

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures .... Max. Marks

Total Marks in Words

A010902T

Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course M.A.

Session 2025-26 Year/Semester 3rd

Subject Hindi

Paper Code

A	0	1	0	9	0	2	T

Exam Date

1	2	1	1	2	0	2	5

Name of Candidate

SAHASTRANSHU MISHRA

Father's Name

KAMLESH KUMAR MISHRA

महाविद्यालय का कोड
College Code

K N 0 1

परीक्षा केंद्र का कोड
Exam Centre Code

K N 0 1

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam

संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व छात्र Ex. Student ○

व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

11568346

A010902T

Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या
Enrollment Number

C S J M A 2 4 0 0 0 1 1 9 5 6 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number

2	4	0	2	9	0	0	0	6	1	2

पेपर कोड Paper Code

A	0	1	0	9	0	2	T

सहस्त्रांशु मिश्रा

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. गोलों में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटिफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृ (1–24) से कम है या कटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश् में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर क निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा को कार्यवाही नहीं की जावेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damag in your answer script, if found than change the answer scrip immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g Subject Code, Subject Name and Question of the Questio Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement o the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over paper should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

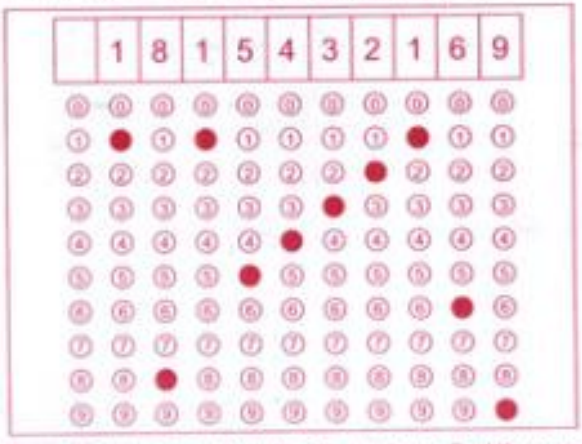

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns

Paper Code

01

खण्ड-अ

(a)

रेखाचित्र और संस्मरण मे अंतर

हिंदी साहित्य की दो प्रमुख विधाओं रेखाचित्र और संस्मरण यूँ तो काफी घुले मिले प्रतीत होते हैं, परंतु इनमें पर्याप्त अंतर भी है—

रेखाचित्र	संस्मरण
→ रेखाचित्र व्यक्ति या स्मृति का शब्दों के द्वारा प्रकट किया चित्र/साकार स्वरूप होता है।	⇒ संस्मरण में लेखक अपनी स्मृतियों एवं अनुभवों को याद कर लेखांकन करते हैं।
→ रेखाचित्र में व्यक्ति के जीवन के पूरे पक्षों को समावेशित किया जाता है।	⇒ संस्मरण अनुभवों का कोई एक पक्ष भी हो सकता है।
→ रेखाचित्र में लेखक स्वयं या अपनी	⇒ संस्मरण में लेखक अपने अनुभव को

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

02

बात नहीं करता है।	बराबर का महत्व देता है।
⇒ रेखाचित्र में शारीरिक पक्ष, दृश्य का चित्रांकन होता है।	⇒ संस्मरण भावना एवं अनुभूति को अधिक महत्व देता है।
उदाहरण → महादेवी वर्मा द्वारा रचित रेखाचित्र 'अतीत के चलचित्र' ✓	'पथ के साथी', 'मेरा परिवार' : महादेवी के संस्मरण हैं।

(b)

आत्मकथा

गद्य की विभिन्न विधाओं में आत्मकथा भी हिंदी साहित्य की अनुपम देन है।
आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के तमाम अनुभवों के साथ अपनी जीवन यात्रा को वय के अनुसार (ऐसा ~~प्रतिब~~ प्रतिबंध नहीं है) कलमबद्ध करता है।

पांच आत्मकथा और उनके लेखक :-

1> अपनी खबर – पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
2- मेरी जीवन यात्रा – राहुल सांकृत्यायन
3- नीड़ का निर्माण फिर–फिर – हरिवंश राय बच्चन
4- मेरी असफलताएं – बाबू गुलाब राय
5- मेरा जीवन प्रवाह – वियोगी हरि
6- जूठन – ओम प्रकाश वाल्मीकि

आत्मकथाओं में लेखक अपने जीवन वृत्त को समावेशित कर साहित्य में समर्पण कर देते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

(c)

'कुटज' निबंध के आधार पर कुटज की विशेषताएं

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने हिमालय के शिवालिक चोटी श्रृंखला के रामगिरी पर्वत पर स्थित कुटज के वृक्ष के लिए लिखा है—

" कुटज का वृक्ष आंतरिक सौंदर्य का परिचायक है, इसका मोल गुणों में निहित है।"

द्विवेदी जी के निबंध के अनुसार कुटज की विशेषताएं इस प्रकार है—

⇒ कुटज का वृक्ष तपस्या का प्रतीक है।

⇒ कुटज का वृक्ष शिवालिक के गिरिपदों में एकाकी रहकर त्याग का संदेश देता है।

⇒ बाहरी सौंदर्य से ऊपर उठकर व्यक्ति का मूल्य उसके गुणों से होता है।

⇒ शिवालिक के गिरिपदों में जहाँ तपन

की सघनता एवं शीत की मार के बाद भी साधना रत कुटज "औषधि अमृत" प्रदान करता है।

शुक्ल जी लिखते हैं —

"अशोक का फूल रूप सौंदर्य का द्योतक है, पर इसमें साधना का तप नहीं।"

⇒ चट्टानी पहाड़ों की मृदा को चीरकर वसुधा के वक्षस्थल से जीवन पेय निकालकर लाना कुटज की जुझारू पन की विशेषता बतलाता है।

कुटज प्रतीक है जीवन में परिवर्तन और संघर्ष का यक्ष द्वारा मेघ को कुटज पुष्प की भेंट और कालांतर में सामाजिक उपेक्षा के बाद भी इसी प्रकार साधना में रत [illegible] को पुष्पों से परिष्कृत कर रहा है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

06

(d)

' कविता क्या है ' निबंध का प्रतिपाद्य :-

' कविता क्या है ' निबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी द्वारा लिखा गया है, जिसमें शुक्ल जी कहते हैं—

" यदि ज्ञान आत्मा की मुक्तावस्था है, तो हृदय की मुक्तावस्था रस है; एवं अब यही रस मनुष्य की वाणी [illegible] शब्दों का आश्रय पा साकार हो उठता है; तो वह कविता कहलाती है। "

वस्तुत: निबंध में शुक्ल जी बतला रहे हैं कि -

⇒ कविता मनुष्य के [illegible] की रसपूर्ण अभिव्यक्ति है।

⇒ कविता के माध्यम से जन की हृदय अभिलाषाओं की " अभिव्यक्ति से संतृप्ति " तक की यात्रा को साकार किया जाता है।

⇒ निबंध में शुक्ल जी जी ने कवियों की कोटि भी बताई है –

पूर्ण कवि – जो कवि जन की इच्छाओं के साथ ; कल्याण का रुप गाते हैं। (साधनावस्था)

अपूर्ण कवि – जो खुशामद और तुकबंदी तक ही सीमित है। (सिद्धावस्था)

"श्रीमानों के शुभागमन के पद्य गाना कवियों का कार्य नहीं है।"
– आचार्य शुक्ल

अर्थात कवि जो साधनावस्था में लगे हैं, सत्य के चितेरे हैं, श्रेष्ठ हैं एवं जो कवि सिद्धावस्था (भोग) को प्राप्त हैं श्रेयस्कर नहीं हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

(e)

'निबंध' किसे कहते हैं -

प्रतापनारायण मिश्र (भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकार का कथन है —

① "विवेचना की धरती पर पड़े हुए प्रत्येक शब्द जो संगठित होकर गद्य में गांभीर्य के साथ चेतना का निष्पादन करे, निबंध कहलाएगा।"

— प्रतापनारायण मिश्र

शाब्दिक अर्थ पर ध्यान दें तो नि: + बंध अर्थात् ऐसा जब जो बंधनों से मुक्त हो। अभिव्यक्ति का खुला रूप निबंध कहलाएगा।

② "यदि गद्य कवियों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है।"

— आचार्य रामचंद्र शुक्ल

तात्पर्य यह है कि निबंध रचना सरल कार्य नहीं है, इस हेतु लेखक को परिष्कृत अवस्था प्राप्त करनी होती है। यह ऐसी विधा है, जो समाज के प्रति साहित्य के दायित्व को यथासमय

Paper Code

अवबोध कराती है।

"क्या लिखूँ" - पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी का प्रसिद्ध निबंध है, जिसमें वे लिखते है - (भूमिका)

(3) " निबंध के द्वारा विचारों के बवंडर को आकार दिया जाता है। "

उस लेखन की यह महत्वपूर्ण विधा समय-समय पर भारतेंदु, शुक्ल जी, मिश्र जी, बक्शी जी, धर्मवीर भारती जी, द्विवेदी जी आदि द्वारा परिष्कृत होती आयी है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

(f)

विष्णु प्रभाकर का साहित्यिक परिचय –

बंगला साहित्यकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी 'आवारा मसीहा' लिखकर साहित्य में ख्यातिप्राप्त लेखक विष्णु प्रभाकर असीम प्रतिभा के धनी हैं। आपका साहित्यक परिचय यथावत है –

भाषा – भाषा पर विष्णु जी का जबरदस्त अधिकार है। सरल, सुबोध भाषा का रूप कलेवर बखूबी जानते हैं।

शैली – प्रवाहमयी शैली जो विवरण एवं कतिपय मधुरता समन्वय देकर गद्य को सरस बनाती चलाती है।

प्रवाह – प्रवाह भाषके हर शब्द का गुण है। जोड़ एवं मेल ऐसा जैसे निर्झर का जल बहता जाए।

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

रचनाएं / कृतियां –

आपकी सुप्रसिद्ध रचनाओं में जीवनी
→ आवारा मसीहा ख्यातिलब्ध है।

→ लकड़ी के बंडल
→ साख की खान
→ अधिकार

आपकी अन्य प्रतीक की रचनाएं हैं; जिसमें प्रभाकर जी की सामाजिक चेतना स्पष्ट दिखती है।

साहित्य में स्थान –

अपनी रचनाओं एवं गद्य पर सिद्धहस्त के साथ साहित्य की अग्र पंक्ति में आप अमर हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

(G)
निबंधकार के रूप में शुक्ल जी –

आचार्य शुक्ल और निबंध साथ –साथ चलते हैं। शुक्ल जी की प्रतिभा के कारण ही; गद्य के एक महत्वपूर्ण कालखंड का नाम 'शुक्ल युग' पड़ा है।

शुक्ल जी ने अनेकानेक निबंध लिखे; जो विभिन्न प्रकार की शैलियों –

विवरणात्मक निबंध
विवेचनात्मक निबंध
आलोचनात्मक निबंध
गवेषणात्मक निबंध
व्याख्यात्मक निबंध
व्यास शैली
व्याख्यात्मक शैली

के हर पक्ष को भली –भाँति जान समझकर लेखन किया। हर शैली के अनुरूप उनकी भाषा भी परिवर्तित

होती रहती थी।

→ चिंतामणि भाग 1

→ चिंतामणि भाग 2

→ लोकमंगल की साधनावस्था

→ कविता क्या है?

→ त्रिवेणी (सूर-तुलसी-जायसी)

आदि निबंधों के रूप में प्रमुख एवं सशक्त निबंधकार के रूप में स्थापित हैं।

Do Not Write anything in this Portion

(H)

यात्रावृत्तांत =

लेखक जब अपनी यात्रा के अनुभवों स्मृतियों, संघर्षों या अन्वेषणों को कलमबद्ध कर, गद्य का रूप प्रदान करता है तो यह यात्रावृत्तांत कहलाता है।

साहित्य में कई यात्रावृत्तांत लेखक हुए हैं, जिनमें राहुल सांकृत्यायन अधिक प्रसिद्ध हैं।

" सैर कर दुनिया की गाफिल,
जिंदगानी फिर कहाँ;
जिंदगानी गर रही तो,
नौजवानी फिर कहाँ "
— [illegible] सांकृत्यायन

पुस्तक	
वोल्गा से गंगा तक	राहुल सांकृत्यायन के यात्रा वृत्तांत
यूरोप की अमरावती रोमा	
सरयूपार की यात्रा	
अमरकंटक की पहाड़ियाँ	

लेखक यात्राओं के माध्यम से जीवन में अनुभव और ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(i)

जिन्होंने जीना जाना -

'जिन्होनें जीना जाना' जगदीश चंद्र माथुर का संस्मरण है; जिसमें उन्होंने ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख किया है; जिनके जीवन का प्रभाव विराट है|

" औरों के हित जो जीता है,
औरों के हित जो मरता है;
उसका हर आँसू रामायण,
प्रत्येक कर्म ही गीता है।"

अर्थात जीवन जो दूसरों के काम आए इस संस्मरण का सार है जिसमें—

- → जवाहरलाल नेहरू,
- → राजेंद्र प्रसाद
- → राधिकारमण सिंह
- → देविका रानी
- → सुमित्रानंदन पंत
- → भिखारी ठाकुर

सरीखे व्यक्तियों का उल्लेख है जिनका जीवन समाज को समर्पित रहा|

ऐसा जीवन जो 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' की परिपाटी से प्रेरित होकर समाज को उन्नति प्रदान करता है| श्रेष्ठ है अन्यथा जीवन तो अनेकों लोग जीकर जाते हैं परंतु सच्चा जीवन कुछ बिरले ही पाते हैं|

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड- ब

(4)

दलित आत्मकथा 'जूठन'

हिंदी भाषा का साहित्य अनेक विद्वानों की लेखनी से सजा हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' इसमें एक कालखण्ड का निर्णायक स्थान है। जब दलित विमर्श और चिंतन नयी अंगड़ाई भर रहा है। अम्बेडकर और फुले के विचारों की दीपशिखा फैल रही थी तब - जूठन - भाग (1) लिखकर ओमप्रकाश वाल्मीकि ने ऐसे परदे हटाये जो दशकों से

बिना छुए यूँ ही लटक रहे थे।

जूठन की कथावस्तु

यदि दलित विमर्श के कुछ चुनिंदा अनुभवों को उठाने की बात की जाए तो जूठन उनमें पहला होगा।

बचपन में शिक्षारम्भ की कठिनाइयों, संघर्षमय जीवन के साथ विद्यालय में अध्यापकों का बुरा व्यवहार सहपाठियों का तिरस्कार, तगाओं के द्वारा शोषण के वातावरण में कैसे प्रारम्भिक शिक्षा पाई।

इण्टरमीडिएट में षडयंत्रपूर्वक रसायन विज्ञान में फेल कर दिये जाने के बाद कैसे देहरादून में अभावग्रस्त जीवन जीकर शिक्षा प्राप्त की; गुजारा किया।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

समय-समय पर घिनौनी जिंदगी के हादसों के साथ मामा के साथ वैमनस्यता के बावजूद निर्वाह किया।

प्रशिक्षण कॉलेज में साहित्य अध्ययन में रत रहे। माता-पिता के आग्रह पर अचानक अपनी इच्छा से असमय विवाह किया और जीवन पर्यंत जाति की 'नीचता' को ढोया।

'जूठन' का स्थान –

'जूठन' मात्र एक आत्मकथा नहीं है, वरन दलित जीवन का चीखता हुआ यथार्थ है, जिसमें दलितों के ऊपर होने वाले अत्याचार शोषण, अन्याय और पीड़ा की

दास्तान है।

पिता का कथन -

" बेटा जाति बदल कर रहना।"

हमेशा उन्हें सीखाता रहा और लिखा

कि " जाति पीछा नहीं छोड़ती " ।

जूठन दलित विमर्श का अनुपम ग्रन्थ है, जिसको पढ़कर कोई भी सहृदय अनेक बार रोयेगा।

' जूठन ' साहित्य को मिली ऐसी अनुपम भेंट है, जिसकी रचना हर हिंदी पाठक महसूस करता है।

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड - स

'8'

'भक्तिन' रेखाचित्र —

महादेवी वर्मा का रेखाचित्र भक्तिन उनकी एक सेविका का रेखाचित्र है, जो उनके जीवन मे अचानक से प्रवेश कर जाती है और उनके जीवन के हर पक्ष को पूर्ण रूप से प्रभावित भी करती है।

'भक्तिन' अपने आप मे अध्ययन व चिंतन का विषय है; जिसे विभिन्न पक्षों में पढ़ा जाना ही श्रेयस्कर होगा।

संघर्षमय जीवन –

→ बाल विधवा :-
भक्तिन का असली नाम लक्ष्मिन है, जिसका बचपन में ही विवाह हो गया तथा असमय विधवा हो गयी।

→ निष्ठुर / लोभी ससुराल –
ससुराली जन उसका तिरह फिर से कराना चाहते है जिससे सम्पत्ति उन्हें मिल जाए।

→ तीन बेटियो की माता –
लक्ष्मिन की कोई पुत्र नही ✓। तीन बेटियों की अकेली जिम्मेदार है वह।

→ अभावग्रस्त जीवन –
नाम तो लक्ष्मिन है परंतु जीवन में लक्ष्मी का सर्वत्र अभाव है।

Do Not Write anything in this Portion

लेखिका से सम्बन्ध –

➔ सेविका / अधिकारिणी –

वह सेविका होकर भी ससमय अपना हक जमाती है।

➔ मातृत्व की मूर्ति

महादेवी की सुविधा का हर समय ध्यान रखना इसे आता है।

➔ अटूट सबंध –

महादेवी चाहकर भी इसे हटा नही सकती और वह स्वयं भी नही जायेगी।

➔ मृत्यु तक की साथी

महादेवी कहती हैं कि मेरी अंतिम साँस तक मेरा भक्तिन से सम्बध बन गया है।

'भक्तिन' माई तो थी सेविका के रूप में पर वह कब महादेवी की छाया बन गयी पता न चला।

Do Not Write anything in this Portion